M. A. Semester - III
Philosophy CC - 10
Unit - IV

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

James Conception of Truth
(Part - II)

इस प्रकार स्पष्ट है कि James के अनुसार, वही विश्वास सत्य है जिसका सत्यापन किया जा सके, किन्तु सत्यापन को वे वृहत रूप से अर्थ में लेते हैं। सत्यापन से तात्पर्य सिर्फ साक्षात रूप से सत्यापन होना ही नहीं, बल्कि अगर किसी वैसी घटना जैसे अतीत की घटना का कोई record है तो उस विश्वास को भी हम सत्य मानेंगे इसलिए क्योंकि वे असाक्षात रूप से सत्यापनीय है। उदाहरण के लिए "Ceasar को Brutus ने कत्ल किया था।" इन सभी बातों का प्रमाण हमारे पास है अतः इसे हम सत्य मानेंगे। किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि सत्य पहले से बनी बनायी कोई वस्तु है, बल्कि यह सत्यापन से प्राप्त की जाती है और इसके लिए दो तरह का सत्यापन होता है direct और indirect. इस तरह James अपने ground से हटते नहीं बल्कि वे सत्यापन को हर हाल में मानते हैं। वे Human mind को ग्रीक दार्शनिकों की तरह कोई search light नहीं मानते बल्कि उसे creative mind मानते

है। मनुष्य ~~William~~ सत्य का द्रष्टा नहीं, बल्कि सत्य का निर्माता है। हमारे अनुभव के दौरान में सत्य निर्माण की प्रक्रिया सतत रहती है उन्होंने लिखा है —

"Truth are made just as health, wealth and strength are made in the course of experience."
(William James.)

James के अनुसार सत्य का सम्बन्ध किसी घटना विशेष से होता है। यह किसी खास वस्तु या घटना विशेष को सांकेतित करता है। प्रत्ययवादियों का खासकर Bradley का यह विचार है कि सत्य की जितनी अभिव्यक्तियाँ हैं या जितने आभास हैं, उसमें सत्य की मात्रा है। जो आभास जितना Harmonious है, जो आभास सत्य से जितना संगत है, वह उतनी ही अधिक मात्रा में सत्य है।

सत्य को James मानव सापेक्ष या वस्तु से सम्बन्धित मानता है। सत्य विश्वास में परिवर्तन हो सकता है।

Idealism भी यह विचार देता है कि आभाषिय जगत का सत्य सापेक्ष और वस्तु विशेष से सम्बन्धित है। लेकिन जहाँ Idealism निरपेक्ष सत्य को प्राप्त करने की आशा रखता है वहां Pragmatism निरपेक्ष सत्य को प्राप्त करनेवाले आदर्श को अप्राप्य (unattainable) मानता है। अगर निरपेक्ष सत्य कभी प्राप्त हो जाय तो फिर ज्ञान और विज्ञान की सारी प्रगति रुक जाएगी। सत्य विश्वास में परिवर्तन

हो सकता है। इसे हम इस तरह से भी स्पष्ट कर सकते हैं, जैसे - बहुत दिनों तक टोलमी का सिद्धान्त भी पृथ्वी केन्द्र में है और अन्य ग्रह उसके चारो ओर चक्कर लगाते हैं काम करता रहा, लेकिन कुछ नयी बातों की व्याख्या करने में जब यह सिद्धान्त असफल रहा तब कापरनिकस का सिद्धान्त की सूर्य केन्द्रित है और अन्य सारे ग्रह उसका चक्कर लगाते हैं। यह नया सिद्धान्त पुराने सिद्धान्त को खण्डित कर दिया। हमारा यह विश्वास परिवर्तित हो गया कि पृथ्वी केन्द्र में है और ग्रह उसके चारो तरफ चक्कर लगाते हैं। दूसरे शब्दों में James के अनुसार कोई निरपेक्ष सामान्य सत्य नहीं होती है सत्य विश्वास में परिवर्तन की सम्भावना है। किन्तु यहाँ James की यह भी मान्यता है कि कुछ खास क्षेत्रों में अनिवार्य सत्य या सामान्य सत्य की बात को नहीं अस्वीकारा जा सकता है जैसे गणित एवं तर्कशास्त्र के क्षेत्र में जहाँ concepts या ideas के सम्बन्ध होते हैं, उन सम्बन्धों के आधार पर अनिवार्य सत्यता स्थापित की जा सकती है

James के अनुसार सत्य को हम ईकाई-ईकाई में प्राप्त करते हैं। सत्य कोई सँजोयी हुई वस्तु नहीं है सत्य का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष की आवश्यकता से होता है James के अनुसार सत्य सापेक्ष है यह हमारी आवश्यकताओं से सम्बन्धित है James के अनुसार प्रत्ययों का सम्बन्ध universal होता है, लेकिन इसका यह मतलब

नहीं कि कोई Universal mind है जो कि इस सम्बन्ध को बनाया है, जैसा कि Hegel ने कहा था कि absolute spirit ही अपने को घटनाओं के सम्बन्ध में व्यक्त करता है। James ने आध्यात्मिकता को प्रश्रय दिया है और उसमें वह finite God को माना है।

James का सत्य सम्बन्धी सिद्धान्त ~~आशावादी~~ का नितर्कष आशावादी और निराशावादी दोनों है। आशावादी नितर्कष इसलिए क्योंकि हमें छोटे-छोटे सत्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए, इससे हमारा ज्ञान भण्डार भरेगा। इनका निराशावादी नितर्कष यह है कि लाख कोशिशों के बावजूद भी हमें निरपेक्ष सत् की प्राप्ति नहीं होगी।

— To be Continued —